B.A. III Honours
Paper VIth
M.A. John

ग्रामीण परिवार
(Rural Family)

ग्रामीण परिवार का परम्परात्मक स्वरूप मुख्यतः संयुक्त या विस्तृत परिवार है और मुख्यतया कृषि संस्कृतियों में पाया जाता है। ग्रामीण परिवार का संयुक्त स्वरूप अतिप्राचीन है। औद्योगीकरण, नगरीय प्रभावों, आर्थिक दबाव, परम्परात्मक धंधों का विघटन, शिक्षा आदि वैज्ञानिक विकास के कारण यह स्वरूप विघटित हो रहा है। संयुक्त परिवार का प्रमुख आधार मानसिक एकता एवं समानता पर आधारित है परन्तु ग्रामीण परिवार का प्रमुख आधार कृषि है। जिसमें परिवार के सभी सदस्य लगे रहते हैं। ग्रामीण जीवन की परिस्थितियाँ तथा आवश्यकता नगरीय जीवन से भिन्न होने के कारण तथा गाँवों में जीवन का अविभाजीकृत स्वरूप के कारण यहाँ आरम्भिक काल से ही एक ऐसे परिवार प्रणाली को महत्व दिया जाता रहा है जिसमें अनेक पीढ़ियों के सदस्य साथ रहते हैं तथा सम्पत्ति, निवास एवं नियन्त्रण के क्षेत्र में सामूहिकता को सर्वाधिक महत्व देते हैं। इसका स्वरूप चाहे संयुक्त हो अथवा विस्तृत लेकिन इसके अन्तर्गत कुछ रक्त संरचनात्मक विशेषताओं का प्रमुख स्थान रहा है और इसके सदस्यों को एकता के सूत्र में बाँधे रखती है।

Dr. Dube का विचार है कि ग्रामीण परिवार संयुक्त तथा विस्तृत परिवार का मिश्रण है। संयुक्त परिवार जिनकी प्रकृति ग्रामीण परिवारों के समान होती है की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए Mandelbaum ने विचार दिया कि "संयुक्त परिवार भारत में बहुत प्राचीन काल से ही पारिवारिक संगठन का एक सामान्य स्वरूप रहा है। और यहाँ के प्राचीन ग्रंथों तथा धर्म विधेयक विधियों द्वारा स्वीकृत है।"

Oscar Lewis के अनुसार "विस्तृत परिवार अत्याधिक शक्तिशाली है तथा वैयक्तिक परिवार अत्याधिक रूप से समरूपता के अंग में एक आधार भूत इकाई के रूप में कार्य करते हैं।"

Irawati Karve के अनुसार "संयुक्त परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक घर में रहते हैं, एक ही स्थान पर बना हुआ भोजन करते हैं, सामान्य सम्पत्ति से सम्बद्ध होते हैं; सामान्य पूजा में भाग लेते हैं तथा किसी न किसी प्रकार रक्त सम्बन्धों द्वारा आपस में बंधे रहते हैं।

Dr. Desai ने कहा कि "उस गृहस्थी को हम एक संयुक्त परिवार कह सकते हैं जिसमें अनेक पीढ़ियों के सदस्य एक साथ रहते हैं तथा सम्पत्ति, आय एवं पारस्परिक अधिकारों और दायित्वों के द्वारा एक दूसरे

के सदस्य होते हैं।

इस प्रकार ग्रामीण परिवार, संयुक्त अथवा विस्तृत परिवार एवं पितृसत्तात्मक परिवार है।

विशेषताएँ

(1) कृषि व्यवसाय : अधिकांश ग्रामीण परिवार कृषि व्यवसाय पर निर्भर होते हैं। गाँवों में नगरों के समान अनेक प्रकार के उद्योग और विभिन्न प्रकार के व्यवसाय नहीं होते हैं।

(2) संयुक्त परिवार: संयुक्त परिवार ग्रामीण समाज की एक प्रमुख विशेषता है। इसमें माता, पिता और कई पीढ़ी का लोग साथ रहते हैं। एक साथ खाते पीते तथा समान संस्कृति रखते हैं।

(3) सदस्यों की पारस्परिक निर्भरता: ग्रामीण परिवार के प्रत्येक सदस्य एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। काम बाँट कर करते हैं तथा भावनाओं में एकरूपता पाई जाती है। व्यक्तिगत विचार, स्वार्थ और इच्छा का कोई स्थान नहीं होता है।

(4) सदस्यों की एकरूपता: ग्रामीण परिवार के सदस्यों में मानसिक व्यवहार और एकरूपता अधिक पाई जाती है। इस परिवार के सदस्यों में समान भावनाएँ, आदतें, आदर्श, कार्य करने के ढंग आदि समान होते हैं।

(5) अनुशासन बद्ध परिवार: परिवार के बड़े बूढ़े के आदेशों के अधीन ही परिवार के सभी व्यक्ति कार्य करते हैं। क्योंकि उनके निर्णय सामान्य अंतिम होते हैं और सभी उसका पालन करते हैं।

(6) परिवार का महत्व और प्रभावशीलता:

परिवार के सदस्यों के [illegible] परिवार का [illegible]

होता है। परिवार को [illegible] के [illegible] नहीं

[illegible] है। परिवार की [illegible] में [illegible]

[illegible] होती है।

(ii) परिवार के [illegible] : परिवार में [illegible]

की [illegible] परिवार के [illegible]

[illegible] करते हैं। [illegible]

के [illegible] की [illegible] है।

(iii) [illegible] परिवार के [illegible]

[illegible] के [illegible]

है। [illegible]

[illegible] है।

(iv) [illegible] है। [illegible] परिवार

के [illegible] में अनेक प्रकार के कार्य

करते हैं।

(v) [illegible] का अभाव, परिवार के

[illegible] आते हैं।

इसलिए ग्रामीण परिवार के व्यक्तियों में [illegible]

का अभाव होता है।

(vi) [illegible] : प्रत्येक ग्रामीण परिवार को

[illegible] हैं।

[illegible]

[illegible]

(vii) [illegible] : ग्रामीण परिवार में

[illegible] है। इनकी अपनी न

[illegible] है। वे पुरुषों की

[illegible] की [illegible] है।

— x —